Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

पातालकोट की भारिया जनजाति की प्रमुख समस्याएँ एवं समाधान के उपायों का अध्ययन

अनुराग सोनी*

* शोधार्थी (समाजशास्त्र) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – पातालकोट लगभग 3000 फीट धरती के नीचे है। यहां 12 गांव बसे हैं। इस विंहगम घाटी में रहने वाले गोंड़ एवं भारिया जनजाति के लोग है। कुछ गावों में धूप के भी दर्शन नहीं होते हमेशा बदली सी रहने के कारण अंधेरा छाया रहता है। दोपहर को थोड़ा बहुत उजाला देखने को मिल जाता हे। प्रारंभ में रहने वाले लोग पहले बिना वस्त्रों के रहा करते थे और जंगली जानवरों को मारकर भोजन करते थे। मगर धीरे–धीरे विकास हो रहा है। शहरी लोगों के संपर्क के आने के फलस्वरूप इनकी जीवन शैली में तेजी से बदलाव आ रहा है। इन जनजातियों के घर आज भी घास फूस के बने हुये है। इस क्षेत्र में विभिन्न जड़ी–बूटियाँ पाई जाती है। जड़ी बूटियों का उपयोग भारिया जनजाति के लोग ईलाज के लिए करते है। यहां के लोग आम के पेड़ खूब उगाते है। महुआ की सब्जी एवं आम की गुठली की रोटी यहां के लोगों का मन पसन्द भोजन है। पातालकोट में सबसे ज्यादा सम्मान वैध का होता है। जिसे भुमका कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि यहां के लोग कम बीमार होते है। कोई बीमार हुआ तो वैध उनका जड़ी बूटियों से ईलाज कर देता है। अपने लिए जरूरी वस्तुएँ खरीदने के लिए ये लोग 20 कि0मी0 दूर सामिया तहसील के बाजार में जाते है। वहीं ये लोग जड़ी बूटियाँ बेचते हैं और जरूरत का सामान खरीद लाते हैं।

पातालकोट में रहने वाली भारिया जनजाति की शिक्षा का स्तर बहुत निम्न है। शैक्षणिक संस्थानों का भी प्रभाव है। गरीबी, के कारण भी भारिया जनजाति के बच्चों में पढ़ाई के प्रति भी रूचि नहीं दिखाई देती है। उच्च शिक्षा का भी अभाव है। सरकार को पातालकोट में रहने वाली अत्यन्त पिछड़ी भारिया जनजाति की शिक्षा के लिए विशेष अभियान चलाना चाहिए तभी इनकी शिक्षा के स्तर में सुधार संभव है।

पातालकोट क्षेत्र के भारिया आदिवासी की समाजिक संरचना की इकाई व्यक्ति है। इनका समाज पुरूष प्रधान है। वैसे इनका समाज संयुक्त परिवार में रहना पसंद करता है। किंतु व्यक्ति चाहे तो स्वतंत्र निर्णय कर अलग घर बसा सकता है। इसके आलावा इनके समाज की यह परम्परा भी है कि यदि परिवार में कोई लड़का नहीं है तो ये लोग दामाद को अपने यहां रख लेते हैं। बड़ा परिवार इनके यहां शान माना जाता है। अधिकांश इनकी रिश्तेदारी आसपास के गांवों तक ही सीमित है। इनके यहां 51 गोत्र हैं किंतु पातालकोट में रहने वाले भारिया 12 गोत्र वाले ही मिलते हैं। इनके यहां सगोत्र में विवाह नहीं होते। इनका उल्लंघन करने पर समाज उनको कठोर दण्ड देने का प्रावधान करता हे।

आर्थिक स्थिति का आकलन करे तो यहां के लोग वनो पर ज्यादा निर्भर है। आर्थिक दृष्टि से यहां के लोग कमजोर है। आर्थिक संरचना के 4 प्रमुख घटक है। (1) प्रकृति संसाधन या वन संपदा (2) कृषि (3) श्रम कार्य (4) पशुपालन एवं शिकार। जंगलों से इन्हे दो प्रकार के वनोपज प्राप्त होते हैं। एक तो वनोपज को ये भोज्य सामग्री के रूप में उपभोग करते हैं दूसरी वनोपज को बेंचकर प्राप्त धन से अन्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। कृषि भारिया जनजाति दूसरा आर्थिक संसाधन हैं। किंतु पातालकोट की घाटी की विषय भौगोलिक परिस्थितियों के कारण कृषि से पूर्णरूप से लाभान्वित नहीं हो पाते हैं। मक्का, कोदो, कुटकी आदि इनकी प्रमुख फसल है। पातालकोट की दुर्गमता के कारण यहाँ पशुपालन भी सही रूप से नहीं हो पाता। गाय, बैल, बकरी मुर्गा आदि यहाँ के लोग पालते है। बैल कृषि कार्य में कार्य में जाये जाते हैं। आर्थिक रूप से भारिया जनजाति के लोगों की आय निम्न होने के कारण शत्प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। कुछ मिलाकर कहे तो भारिया जनजाति समाज पातालकोट में आदिम अर्थव्यवस्था के प्राथमिक चरणों में कष्टमय जीवन यापन कर रहा है।

मध्यप्रदेश राज्य सरकार द्वारा लागू की गई सभी योजनाएं पातालकोट घाटी क्षेत्र के भारिया जनजाति में पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से संचालित की जा रही है। जिसे वहां के निवासियों के माध्यम से संचालित की जा रही है। जिससे वहां के निवासियों की योजनाओं के प्रति रूचि, उसका लाभ उठाने की जिज्ञासा मूलरूप से योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण होने की सूचक है। शासन स्तर पर पर्याप्त मदद दी जा रही है। किसी भी स्तर पर भेदभाव देखने को नहीं मिला है। परंतु पातालकोट घाटी क्षेत्र में इन विकास योजनाओं के परिणाम का प्रभाव प्रत्येक जनपद पंचायतों में अलग–अलग देखने को मिला है। जिसके कारण के रूप में जन जागरूकता एवं शिक्षा का आभाव, जनप्रतिनिधियों के नेतृत्व क्षमता भारिया आदिम जनजाति निवासियों में मघपान का होना महिलाओं की संगठन क्षमता तथा पातालकोट घाटी क्षेत्र में अंधविश्वस का होना आदि है। पातालकोट घाटी क्षेत्र में भारिया जनजाति के विकास के लिए म0प्र0 राज्य सरकार की भूमिका अहम् है। साथ ही भारिया जनजाति विकास के लिए पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। पातालकोट घाटी क्षेत्र में ग्राम पंचायतों को अपने विकास के लिए स्वयं की ओर से भी प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक कार्य के लिए राज्य सरकार से अपेक्षा करना भी उचित नहीं है। परंतु इन विकास योजनाओं की सार्थकता तब तक सिद्ध नहीं हो सकती जब तक वास्तविक पातालकोट घाटी क्षेत्र में भारिया जनजाति हितग्राहियों को शत प्रतिशत

लाभ नहीं मिल जाता है।

भारिया जनजाति की प्रमुख समस्याएँ– आजादी के 75 वर्ष के पश्चात् भी भारिया जनजाति विशेष रूप से पातालकोट क्षेत्र के विकास हेतु किए गए शासकीय प्रयासों के फलस्वरूप इस वर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में कुछ सुधार तो दिखाई देता है किंतु उनके विकास की गति अत्यन्त धीमी है। आज भी यह क्षेत्र और यहाँ रहने वाले भारिया जनजाति को मूलभूत समस्याएँ पानी, सड़क, बिजली, खान–पान की वस्तुएँ, रोजगार के साधन, पलायन, चिकित्सा, शिक्षा का आभाव आदि समस्याएँ घेरे हुये है। यहां की जनजाति गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। यहाँ के लोग केवल गुजारे की अर्थव्यवस्था पर जी रहे हैं।

पातालकोट के भारिया जनजाति के लोगों की समस्याएँ अन्य आदिवासी समाज की समस्याओं की तुलना में काफी भिन्न है। इसका मुख्य कारण यह है कि जनजातीय समुदाय विकास को विभिन्न अवस्थाओं से अभी तक गुजर नहीं पाई है जैसा अन्य आदिवासी समाज या अन्य समाज के लोग प्रयास कर चुके हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से भारिया जनजाति विशेषकर पातालकोट क्षेत्र पर अध्यापन करने के पश्चात् इन जनजाति के आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु शासकीय एवं गैर सामाजिक संगठनों की सफलता एवं विफलता के विभिन्न क्रियात्मक समस्याओं को परिभाषित किया गया है। जो निम्नानुसार है।

1. **दुर्गम स्थानों का होना** – पातालकोट में 12 गांवों के लोग सदियों से दुर्गम स्थानों पर निवास करते आये है जो अन्य समाज से दूर एवं एकांत में है। इस कारण उपका संपर्क समाज की मुख्यधारा से नहीं हो पाया है। इस कारण भारिया लोगों को जीवनयापन तथा विकास के संसाधन जुटाने में बड़ी समस्या होती है।

2. **शिक्षा का अभाव** – निर्धनता एवं अनपढ़ होने के कारण जनजातीय लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने के स्थान पर मजदूरी या खेती के कार्य में या वनोपज संग्रह कराने में लगा देते है जिससे वे अशिक्षित या छोटी कक्षा तक ही पढ़ पाते हैं। जो बच्चे स्कूल जाते भी है वे बीच में ही स्कूल जाना बंद कर देते हैं। जो बच्चे पढ़ लिख जाते हैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं वे इस क्षेत्र को छोड़कर चले जाते हैं। फलस्वरूप उन्हे उसका साथ नहीं मिल पाता।

3. **चिकित्सा सुविधाओं का अभाव** – भारिया जनजाति के लोग दुर्गम स्थानो पर निवास करने की वजह से शासन स्तर पर चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पा रही है। ये लोग जड़ी बूटियों या झाड़फूंक द्वारा इलाज करते हैं। यदि स्वास्थ्य केन्द्र खोले भी गए है वहां या तो डॉक्टर नहीं है यदि डॉक्टर है तो दवाईयाँ नहीं है। अत: पातालकोट क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा का अभाव है।

4. **गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन** – पतालकोट क्षेत्र के भारिया जनजाति अत्यन्त पिछड़ी जनजाति की श्रेणी में आती है विकास योजनाओं का लाभ इन्हे जैसा मिलना चाहिए वैसा आज भी नहीं मिल रहा है। फलस्वरूप ये लोग गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन गुजार रहे है। दुर्गम स्थानों में निवास करने के कारण इन्हे वांछित सुविधायें नहीं मिल पा रही है या योजनाएँ इनके लिए विफल हो रही है।

5. **रोजगार की व्यवस्था –** पातालकोट के आदिवासी जंगलों पर ही निर्भर है। जंगल घटते जा रहे है। खेती पर्याप्त नहीं हो पा रही है। वनो में पर्याप्त वनोपज पैदा नहीं हो पा रह है। वनों पर सरकार का नियंत्रण नहीं होने से यहां के लोंगों में रोजगार की गंभीर स्थिति पैदा हो गई है। अधिकांश जनजातीय लोग भूमिहीन है जो केवल मजदूरी पर ही निर्भर है।

6. **परम्परागस कुटीर उद्योगों का बंद हो जाना** – भारिया जनजाति के लोग टोकरी बनाने, चटाई बनाने, बांस एवं लकड़ी का सामान बनाने, दस्तकारी तथा खिलौने बनाने आदि से अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा कर लेता था। आधुनिक प्लास्टिक – पेपर युग ने इन छोटे–छोटे कुटीर उद्योगों को बंद कर दिया। लोंगों द्वारा इनके कुटीर उद्योगों से बनी चीजों को नहीं लेने के कारण बेरोजगारी की नई समस्या उत्पन्न हो गई है।

7. **मद्यपान की समस्या** – भारिया जनजाति में मद्यपान का प्रचलन है ये लोग हर मौके पर या त्यौहार आदि में शराब का सेवन करते हैं। बच्चे, युवा बुजुर्ग, और औरत सभी शराब का सेवन करते हैं। पहले ये लोग स्वयं ही शराब बना लेते थे किंतु सकरार द्वारा प्रतिबंध के कारण इनके आय का एक हिस्सा शराब पर खर्च हो जाता है। सभ्यता के नए तौर तरीको कारण मद्यपान का प्रचलन और बढ़ गया।

8. **सिंचाई सुविधाओं का अभाव** – ऊँची–नीची पहाड़ियों पर सिचाई की सुविधाओं को उपलब्ध कराना कठिन है। पातालकोट में भी यही समस्या के चलते यहां सिंचाई सुविधाओं का आभाव है। नई तकनीकि से ही सुविधाएं बढ़ सकती है।

9. **बाल विवाह का प्रचलन** – आदिवासी समूहों में आज भी छोटी उम्र में विवाह करने की प्रथा है। ये लोग आज के वैज्ञानिक युग में भी इसे उचित मानते है। फलस्वरूप बच्चों का शारीरिक–मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। आगे चलकर अनेक समस्याएँ आ जाती है। इसका प्रभाव आर्थिक स्तर पर भी पड़ता है।

10. **पलायन की समस्या** – पातालकोट के आदिवासी रोजगार की तालाश में शहरों में चले जाते है। फलस्वरूप उनका परिवार से सम्पर्क एवं लगाव कम होने लगता है। फलस्वरूप पारिवारिक विघटन की समस्या उत्पन्न होने लगती है। प्राय: यह देखा जा रहा है कि जनजातीय समाज का एक समूह अपना क्षेत्र, घर, परिवार छोड़कर शहरों में बस गया है।

11. **चुनाव में मतदान की समस्या**–पातालकोट में लोकसभा या विधानसभा या अन्य चुनावों में मतदान कराना प्रशासन के लिए सबसे बड़ी समस्या है। अधिकतर गांवों में सड़क नहीं है। मतदाताओं को कच्चे रास्तों का सहारा लेना पड़ता है। पातालकोट के लोगों ने बताया कि–'पहले वो उन्हे पातालकोट से निकलकर ऊपर के गांव में वोट करना होता था लेकिन अब प्रशासन ने चार पोलिंग बूथ बना दिया है। 12 गांव के आदिवासी वोट डालने के लिए पहुंचते हैं इनमें से अधिकतर गांव में सड़क नहीं है। इसकी वजह से लोगों को पगडंडियों का सहारा लेना पड़ता है। अधिकतर घर पहाड़ों पर दूर दूर है जिसकी वजह से सड़कों का निर्माण कराना भी कठिन है।

12. **पक्की सड़क की समस्या** – 3000 फिट जमीन से नीचे होने के कारण तथा ऊँची नीची पहाड़ियों के कारण 12 गांवों में से 6 गांवों में पक्की सड़क नहीं है। बरसात के मौसम में तो और परेशानी का सामना करना पड़ता है। यहां के लोगों को पंगडंडियों का सहारा लेना पड़ता है। कुछ गांव जरूर पक्की सड़कों से जुड़ गए है। किंतु पूर्ण सुविधाजनक नहीं है।

13. **पीने के पानी की समस्या** – पातालकोट के आदिवासियों को पीने के पानी की समस्या का सामना करना पड़ता है। तालाब ढाना के रहने वाले सभी परिवार पीने के पानी के लिए हर रोज लंबा सफर करते है। करीब दो किलोमीटर चलने के बाद एक गंदे नाले से पीने का पानी लाते हैं। यहां के

भारिया शुद्ध पानी के लिए तरस रहे हैं। पीने के पानी के लिए यहां कोई भी इंतजाम सरकार ने नहीं किया है। तालाब ढाना में कुल 100 परिवार रहते है। फिलहाल यह लोग पेयजल संकट से जुझ रहे है। योजना तो सरकार द्वारा बनाई गई लेकिन पानी नहीं पहुँचा।

पातालकोटकीभारियाजनजातिके समाधान के लिए उपाय:

1. पीने के पानी की समस्या का समाधान प्राथमिक स्तर पर सर्वप्रथम करने के लिए नीति बनाते हुए किया जाये जिन गांवों में एवं जिस जगह समस्या हो वहां पहले क्रम में पानी की समस्या का समाधान किया जाए।
2. चिकित्सा के लिए प्रत्येक गांव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के माध्यम से दवाईयां उपलब्ध करायी जाये। लोगों को स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया जाए ये लोग झाड़, फूंक, टोना टोटका का सहारा न ले ऐसी जागरूकता इनमें लाने का प्रयास करें। सामाजिक संगठन इस कार्य में सहयोग कर सकते हैं।
3. शिक्षा के लिए उचित व्यवस्था हो। साथ ही शिक्षित होने के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए। बच्चे स्कूल क्यों नहीं आ रहे। नहीं आने का उचित कारण खोला जाए और उस पर उचित ढंग से कार्यक्रम बने जिससे बच्चे स्कूल जाने के प्रति जागरूक हो जाए।
4. पातालकोट में भारिया जनजाति की आर्थिक समस्याएँ आज भी गंभीर है। इसका समाधान करने के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि करते हुए स्वरोजगार हेतु पहल सर्वोच्च स्तर पर की जाए। कुटीर उद्योगों के माध्यम से वस्तुएं बनाई जाए एवं उसकी बिक्री के लिए उचित व्यवस्था की जाए। इस क्षेत्र में कृषि की नई तकनीकी का भी विकास किया जाए। शिक्षा द्वारा पशुपालन, मुर्गीपालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन एवं अन्य स्वरोजगार को भी प्राथमिक स्तर पर प्रोत्साहन दिया जा सकता है।
5. भारिया जनजाति के लोग संकोची एवं संतोषी होते है। उनमें धर्नाजन करने या व्यवसाय करने की पृवत्ति नहीं पाई जाती। अत: उन्हे उद्यमी बनाने तथा व्यवसायिक दृष्टिकोण अपनाने हेतु जागरूक किया जाए।
6. शासकीय सहायता देने के स्थान पर ऐसी योजनाएँ बनाई जाए ताकि आदिवासी आत्मनिर्भर बनकर स्वयं का एवं परिवार का विकास करते हुए उच्च जीवन स्तर को प्राप्त कर सके।
7. भारिया जनजाति के लोगों को विकास हेतु स्वालम्बी बनाया जाना चाहिए। साथ ही उन्हे सहभागिता, सहकारिता एवं पारस्परिक सहयोग की प्रेरणा देनी होगी जिससे वे स्वाभिमान तथा आत्मनिर्भर भी बन सके।
8. पातालकोट के जनजातीय समाज की सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए जनजातीय नेताओं की सहायता से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। जनजातीय समस्याओं के समाधान के लिए जनजातीय लोगों को आगे आना होगा।
9. भारिया जनजाति के लिए शासकीय सेवाओं में प्राथमिकता के आधार पर नियुक्तियां देना जरूरी है। इसी तरह राजनीतिक दलों के लिए ऐसी आचार संहिता बनाई जाए जिससे वे अपने लाभ के लिए इन्हे भड़का न सके।
10. वन संबंधी ऐसे कानून बनाये जाए जिससे आदिवासी समाज वनों से वनोपज प्राप्त कर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सके।
11. आदिवासी विकास के कार्यक्रमों की सतत जांच एवं निगरानी रखने की आवश्यकता है।
12. आदिवासी की विकास योजनाओं में सक्रिय आदिवासियों की सहभागिता जरूरी है तभी विकास योजनाओं सफल हो सकती है।

निष्कर्ष रूप से देखा जाये तो पातालकोट के भारिया जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। भारिया जनजाति के लोग इस परिवर्तन को स्वीकार भी कर रहे हैं। आदिवासियों के विकास की योजनाओं को सही रूप से क्रियान्वियत करने हेतु ईमानदार अधिकारी एवं कर्मचारी नियुक्त किए जाए साथ ही विकास कार्यक्रमों में जनजातीय लोगों की सहभागिता भी सुनिश्चित की जाए तभी सही अर्थो में पातालकोट के आदिवासियों का खाससौर पर भारिया जनजाति के लोगों का सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विकास के उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ढाकरिया, दिनेश कुमार, भारिया जनजाति में विकास योजनाओं का प्रभाव एवं मूल्यांकन अध्ययन।
2. शर्मा डॉ श्रीनाथ, जनजाति समाजशास्त्र।
3. शोधार्थी के निजी सर्वे द्वारा अध्ययन।
4. वाजपेयी, सरला, आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन (छिन्दवाडा जिले की भारिया जनजाति का अध्ययन)।

****